IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, April 2025
Impact Factor: 7.67

भारत की विदेश नीति पर एक अध्ययन

डॉ. प्रीति पाण्डेय
प्राध्यापक राजनीति विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

अशोक कुमार नापित
शोधार्थी राजनीति विज्ञान
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश –

किसी देश की विदेश नीति, जिसे विदेशी संबंधों की नीति भी कहा जाता है, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के वातावरण में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राज्य द्वारा चुनी गई स्वहितकारी रणनीतियों का समूह होती है। भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से सम्पन्न भारत एक विकासशील देश है। अपने सुदीर्घ ऐतिहासिक विकास में इसने अनेक जय, पराजय, उत्थान–पतन के चरण देखे है, प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति का मुख्य आधार राष्ट्रहित है और भारत भी इसका अपवाद नही है। भारत ने अपने राष्ट्रहितो ं को सुरक्षित रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को उन्नत करने, राष्ट्रो के मैत्रीपूर्ण एवं सहिष्णु संबंधें को बनाये रखने तथा अंतर्राष्ट्रीय कानूनो व संधियों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करने में सदैव प्रयासरत रहा है। यह भारतीय विदेश नीति की विशेषता ही है कि संकट की स्थिति में अपने आप को उबारा। किसी भी देश की विदेश नीति एक विशिष्ट आंतरिक व बाह्य् वातावरण के स्वरूप द्वारा काफी हद तक निर्धारित होती है। इसके अतिरिक्त इतिहास, विरासत, व्यक्तित्व, विचारधाराएं, विभिन्न संरचनाओं आदि का प्रभाव भी इस पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मुख्य शब्द – विदेश, नीति, प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय, संबंध आदि।

प्रस्तावना :–

भारत संसार में सबसे बड़ी आबादी वाला दूसरा देश है। इसकी ऐतिहासिक परम्परा की जड़े ं हजारों वर्ष पुरानी है और अनेक निकटवर्ती–संलग्न पड़ोसी राष्ट्र 'भारतीय क्षेत्र' के अंतर्गत ही अपनी अलग पहचान बनाये रखने का प्रयत्न कर सकते हैं। नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, बंगला देश और श्रीलंका सम्प्रभु राष्ट्र हैं और इनके अपने अलग राष्ट्रीय हित स्पष्ट हैं परन्तु इनमें से कोई भी देश भारतीय विदेश नीति के उतार–चढ़ाव कि उपेक्षा नहीं कर सकता। इसी कारण कोई भी महाशक्ति, चाहे वह अमेरिका हो या रुस, लगभग एक अरब आबादी वाले दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप में राजनयिक दृष्टि से भारत की प्रमुख भूमिका की उपेक्षा नहीं कर सकता। भारत का महत्व सिर्फ जनसंख्या को लेकर ही नहीं, बल्कि औद्योगिक राष्ट्रो ं की गिनती में उसका दसवाँ स्थान है और वैज्ञानिक व तकनीकी संसाधनों के भंडार के रुप में यह तीसरे स्थान पर है। भारत की इस तकनीकी व वैज्ञानिक क्षमता की उपेक्षा नही की जा सकती। भारत की भू–राजनीतिक स्थिति भी कुछ ऐसी है कि उसका अन्तर्राष्ट्रीय राजनयिक महत्व बहुत बढ़ जाता है। भारतीय विदेश नीति के अध्ययन का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता हैं कि वह किसी एक बड़े देश के साथ नहीं जुड़ी थी। इन सब स्थूल बातों के अतिरिक्त विचारधारा का पक्ष कम महत्वपूर्ण नहीं, नेहरू जी द्वारा सुझायी गयी गुट निरपेक्षता की अवधारणा को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वर्षो में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण, मौलिक व रचनात्मक पहल समझा जा सकता हैं। जिस समय भारत आजाद हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर उसकी स्थिति अनूठी थी। भारत के गरीब होने पर भी स्वाभिमान के साथ नेहरू जी ने स्वाधीन विदेश नीति का मार्ग चुना और किसी भी बड़ी शक्ति का 'पिछलग्गू' बनना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने जल्दी ही आजाद होने वाले छोटे–बड़े अफ्रो–एशियाई देशों की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, April 2025
Impact Factor: 7.67

अभिलाषा–महत्वाकांक्षा को मुखर किया। इस रचनात्मक पहल का एक और पहलू था–निर्मम यथार्थवादी विकल्प का विकल्प ठुकराकर आदर्शवादी विकल्प सुझाना। नेहरू जी जोर देकर यह बात दोहराते थे 'आज का आदर्शवाद आने वाले कल का यथार्थवाद ही है।

भारतीय विदेश नीति के अध्ययन का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता हैं कि वह किसी एक बड़े देश के साथ नहीं जुड़ी थी, बल्कि विचारधारा और रणनीति के क्षेत्र में रचनात्मक पहल करने के साथ–साथ वह तीसरी दुनिया के बहुत सारे देशों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकी। भले ही इण्डोनेशिया जैसा देश सिर्फ औपचारिक रूप से भारत से पहले आजाद हो चुका था, किन्तु गृह युद्ध में संघर्षरत होने के कारण उसकी सार्थक अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका निभाने की स्थिति नहीं थी। चीन में भयंकर उथल–पुथल मची थी और इन सब घटनाओं के संयोग से नेहरूकालीन भारत को आजादी के तत्काल बाद के वर्षो मे ं अपनी विदेश नीति को प्रभावशाली ढंग से पेश करने का अवसर मिला। इन सभी कारणों के संयोग में भारतीय विदेश नीति का अध्ययन आजादी के समय से ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्यार्थियों के लिए आकर्षक और महत्वपूर्ण विषय रहा है।

भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से सम्पन्न भारत एक विकासशील देश है। अपने सुदीर्घ ऐतिहासिक विकास में इसने अनेक जय, पराजय, उत्थान–पतन के चरण देखे है, आंधी–तूफान झेले है तथा हजारो वर्ष के अपने कटु–मधु अनुभवों के संदर्भ में इसने अपनी वर्तमान कालीन विदेशनीति का संचालन किया है। किसी देश की विदेश नीति उसके इतिहास, संस्कृति, भूगोल, आर्थिक स्थिति एवं उसके नेताओं के व्यक्तित्व, संरचना से निर्धारित होती है, भारतीय विदेश नीति हमारी संस्कृति का एक अंग तथा हमारी राजनीतिक परंपरा का एक अभिन्न तत्व है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय विदेश नीति निर्माताओं के समक्ष अनेक समस्याएं थी। उनके समक्ष अंतर्राष्ट्रीय आचरण के आचार्य कौटिल्य के आदर्शवाद तो थे ही महान अशोक द्वारा प्रतिपादित बौद्ध परंपराएं भी थी।

भारतीय विदेश नीति –

भारत विश्व में एक विस्तृत भूभाग और विशाल जनसंख्या वाला देश है। अतः इसकी विदेश नीति का विश्व की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। स्वतंत्रता से पूर्व भारत की कोई विदेश नीति नही थी भारत ब्रिटिश सत्ता का गुलाम था परन्तु विश्व मामलों में भारत की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। इसका सांस्कृतिक अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। भारत की स्पष्टवादी नीति विश्व में एक अलग पहचान रखती है। भारत ने हमेशा से निष्पतावादी नीति का अनुसरण किया है।

(अ) स्वतंत्रता से पूर्व –

स्वतंत्रता से पूर्व भारत की विदेश नीति की स्वतंत्र घोषणा 15 अगस्त 1947 को स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद की गई थी। इससे पूर्व भारत की कोई स्पष्ट विदेश नीति नहीं थी भारत ब्रिटिश सत्ता से गुलाम था भारत ने आजादी के लिए कड़ा संघर्ष भी किया है। वैसे भी भारत 16वीं शताब्दी तक विश्व विख्यात रहा 31 दिसम्बर 1600 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत आगमन से लेकर 14 अगस्त, 1947 तक अंग्रेजों का इस पर आधिपत्य रहा। भारत ब्रिटेन का उपनिवेश रहा हैं अग्रेज भारत पर 200 वर्षो तक एक छत्र राज्य करते रहे। इस दौरान भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का विकास भी किया गया इससे भारतीय विदेश नीति पर उदार लोकतंत्र शक्ति संतुलन, पश्चिम शिक्षा एवं संस्कृति का प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा है। भारत ने असंलग्नता की नीति अपनायी है अंग्रेजों का भारत में आने का पहला दृष्टिकोण व्यापारिक था जो बाद में राजनैतिक उद्देश्य में परिवर्तित हो

गया। स्वतंत्रता से पूर्ण भारत की कोई विदेश नीति नहीं थी। भारत में राजशाही राज चलता था। इसेके बाद भारत में कई देशों के लोग व्यापार के मकसद से भारत आते गये। इसी प्रकार अंग्रेजों का भी आगमन हुआ।

(ब) स्वतंत्रता उपरांत –

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ किन्तु भारत की विदेश नीति का सूत्रपात 2 सितम्बर 1946 से माना जाता है। जबकि एक अन्तरिम सरकार का निर्माण हो गया और यह समझा जाने लगा था कि भारत वास्तव में अपनी विदेश नीति का अनुसरण करने में स्वतंत्र है। मार्च 1950 में लोकसभा में भाषण देते हुए पण्डित नेहरू ने कहा था यह नहीं समझा जाना चाहिए कि हम विदेश नीति के क्षेत्र में एक दम नई शुरूआत कर रहे हैं यह एक ऐसी नीति है जो हमारे अतीत के इतिहास से और हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ी है। इसका विकास उन सिद्धांतों के अनुसार हुआ है। जिनकी घोषणा अतीत में हम समय–समय पर करते रहे है। भारतीय विदेश नीति का निर्धारण तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से नही हुआ वरन इसके निर्माण मे भारतीय प्राचीन परम्पराओं के उच्च आदर्शो का भी ध्यान रखा गया जब भारत ने अपनी विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के तत्वों को सर्वोपरि महत्व दिा तो इसका कारण भारत की यही परम्परा थी। विश्व दो गुटो में बटा हुआ था इस प्रकार भारत ने किसी भी गुट में शामिल होना उचित नहीं समझा उसने गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया। भारत में उपनिवेशवाद, जातिवाद, फासिज्म का विरोध किया। कइ सिद्धांतों को लेकर भारत विश्व मामलों में अपनी अगल पहचान रखता है।

भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व –

वर्तमान युग में संचार माध्यमों के विकास व राज्यों के मध्य बढ़ती हुई निर्भरता के कारण विभिन्न देशों के मध्य अन्तः सम्बन्धों का विकास अनिवार्य बन गया है। इसीलिए प्रत्येक राज्य का व्यवहार अन्य राज्यों के व्यवहार को नकारात्मक या सकारात्मक रूप से प्रभावित करता हैं। राज्यों के मध्य इसी प्रक्रिया के स्वरूप को विदेश नीति कहते हैं। विदेश नीति के अन्तर्गत राज्य अपने निकटवर्ती या दूरगामी हितों की पूर्ति हेतु कुछ आवश्यक कदम उठाते हैं। परन्तु विदेश नीति सम्बन्धित इन निर्णयों को कई प्रमुख तत्व प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रभावित करते हैं। विदेश नीति का यह प्रारूप विभिन्न तत्वों के मध्य अन्तः क्रियाओं का परिणाम होता है, जिनमें से कुछ को स्थाई व कुछ को अस्थाई माना जाता हैं।

आर्थिक विकास –

किसी भी देश की विदेश नीति में सुरक्षा व प्रभुसत्ता के बाद मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना होता हैं। भारत भी इस दृष्टि से अपवाद नहीं है। यहाँ भी स्वतंत्रता के बाद जहाँ राष्ट्रीय सुरक्षा, भारत की प्रभुसत्ता एकता व अखंडता, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत के स्थान के साथ देश का आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। अतः विदेश नीति अपनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि इसका आर्थिक सन्दर्भ भी स्पष्ट रूप से उजागर रहे। अतः आर्थिक विकास भारतीय विदेश नीति का एक मुख्य निर्धारक तत्व रहा है।

राजनैतिक परम्पराएँ –

किसी भी देश की विदेश नीति उसके राजनैतिक इतिहास व परम्पराओं से अत्यधिक प्रभावित होती है। यह बात भारत जैसे देश के लिए अति उपर्युक्त है, क्योंकि भारत की अपनी एक सभ्यता रही है तथा इसके स्वतंत्रता आन्दोलन का एक लम्बा इतिहास रहा है जिनका प्रभाव यहाँ अति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता हैं। इसी सन्दर्भ में पामर व पर्किन्ज का मानना है कि भारतीय विदेश नीति की जड़े इसकी सभ्यता, अंग्रेजी साम्राज्य की विरासत, स्वतंत्रता आन्दोलन तथा गाँधीवादी दर्शन में है। जयन्तनुजा बंद्योपाध्याय भी इन्हीं कारणों के फलस्वरूप भारतीय राजनैतिक परम्पराओं के प्रभाव के पाँच तत्वो ं के सन्दर्भ में विश्लेषण करते हैं ये पाँच तत्व हैं राजनीति व शक्ति का आदर्श विचार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आदर्शवादी दृष्टिकोण, रंगभेद व उपनिवेशवाद का विरोध, पूँजीवादी पाश्चात्य व्यवस्था तथा साम्यवाद का विरोध।

व्यक्तिगत और राजनीतिक तत्व –

उपर्युक्त तत्वों के अतिरिक्त विदेश नीति का निर्माण प्रमुख रूप से उन नेताओं के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है जो इसका निर्माण करते है। इसके अतिरिक्त राजनैतिक दल, दबाव समूह, संसद विदेश मंत्रालय, विदेशमंत्री, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और केबीनेट , विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। प्रो. गेलब्रेथ के अनुसार विदेश नीति घरेलू नीति की भांति उन व्यक्तियों की मौलिक भावनाओं को प्रदर्शित करती है जिन्होंने इसका निर्माण किया।'' किसी देश की विदेश नीति दिये गये समय में वह परिणाम है जैसे कि उस देश का अभिजात वर्ग उसे समझता है। बिना किसी संदेह के यह कहना उचित है कि भारतीय विदेश नीति का निर्माण प्रमुख रूप से पं. नेहरू द्वारा किया गया। वे ही भारतीय विदेश नीति में प्रमुख शिल्पी थे। भारतीय विदेश नीति मे ं 17 वर्षों तक जो एकरूपता दिखाई देती है, इसका श्रेय पंनेहरू को जाता है। वे लगातार तीन बार भारत के प्रधानमंत्री व स्वयं विदेश मंत्री भी रहे। भारतीय विदेश नीति को नेहरू के अलावा अन्य व्यक्तित्व भी प्रभावित करते रहे जैसे सरदार पटेल, 1947–50 की पटेल योजना के अन्तर्गत ही अनेक राजघरानों को भारत में जोड़ा जा सकता था। कृष्ण मेनन, डॉ. राधा कृष्णन के एम. पणिक्कर, सरदार स्वर्ण सिंह आदि।

भारतीय विदेश नीति एवं पड़ोसी देश –

विदेश नीति के निर्धारण में प्रत्येक देश को पड़ोसी राष्ट्रों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। कभी–कभी ऐसे अवसर भी आते हैं जब देश की सुरक्षा को पड़ोसी देशों की राजनीति प्रत्यक्षरुप से प्रभावित करती हैं। भारत की विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु अपने पड़ोसी राष्ट्रो ं के साथ सामरिक रुप से सुरक्षित, राजनैतिक रुप से स्थिर व शाँतिपूर्ण तथा आर्थिक रुप से सहयोगात्मक रहा है इसीलिये भारत सक्रिय रुप से निरंतर अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ संबंध की प्रक्रिया में लगा रहता है। भारत के प्रमुख पड़ोसियों में, पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश एवं भूटान आदि देश को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इन्हीं पड़ोसी देशों के साथ उदारीकरण के परिप्रेक्ष्य में स्थापित विदेश नीति की चर्चा की गयी है–

पाकिस्तान से सम्बंध –

अंग्रेजों की दासतां से मुक्ति के पश्चात् भारत एवं पाकिस्तान को आपस में मित्र होना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं हुआ दोनों देशों के बीच कटुता की पृष्ठ भूमि में विभाजन के दौरान भारत से मुसलमानों का पाकिस्तान में पलायन तथा हिन्दू एवं सिक्खों का पाकिस्तान से भारत आना तथा इस प्रक्रिया में होने वाले नरसंहार के कारण दोनों देशों के बीच वैमनस्य का जो

नासूर पैदा हुआ उसका घाव आज तक भरा नहीं जा सका है। भारत–पाकिस्तान के विभाजन के फलस्वरुप जो प्रमुख विवादास्पद मुद्दे थे उनमें पंजाब और बंगाल की सीमाओं का विभाजन, सेनाओं का बंटवारा, असैनिक सेनाओं का विभाजन, सरकारी सम्पदा एवं देनदारी की समस्या।

चीन के साथ सम्बंध –

पाकिस्तान के बाद चीन भारत का दूसरा पड़ोसी देश है जिसके साथ भारत के महत्वपूर्ण विदेशी सम्बंध है ऐतिहासिक रुप से प्राचीन काल में भारत व चीन दो प्रमुख सभ्यताएं रही हैं जो आपसी सह अस्तित्व के आधार पर स्थापित थी। भारत बहुत पहले से चीन का समर्थक देश रहा है। 1931 में जापान द्वारा मंचुरिया पर आक्रमण करने पर भारत ने चीन के पक्ष में जापान की निंदा की 1937 में चीन जापान युद्ध में भी भारत ने चीन का समर्थन किया।58 भारत ने तथा चीन के साम्यवादी व्यवस्था को 30 दिसम्बर 1949 में मान्यता प्रदान की दोनों देशों के मधुर सम्बंध की पराकाष्ठा के फलस्वरुप हिन्दी–चीनी भाई–भाई का नारा दिया गया। भारत का चीन से 1947–1959 तक मैत्रीपूर्ण सम्बंध रहा चीन ने भी भारत सद्भाव पूर्णनीतियो ं के प्रत्युत्तर में गोवा और कश्मीर के मामलों में भारत का समर्थन किया अप्रैल 1954 को भारत व चीन ने ''पंचशील'' नियमों को अंगीकार किया।

श्रीलंका के साथ सम्बन्ध –

भारत का श्रीलंका के साथ सम्बन्ध पौराणिक काल से ही हैं भारत व श्रीलंका के मध्य ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक समानताओं के साथ–साथ निकटतम पड़ोसी होने की अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थिति है। दोनों देशों के मध्य संघर्ष एवं सहयोगात्मक सम्बन्धों की झलक देखने को मिलती है। तमिल समुदाय के जातीय मुद्दे को लेकर दोनों देशों के बीच लम्बे समय तक तनाव की स्थिति बनी रही। श्रीलंका की संयुक्त राष्ट्रीय पार्टी के शासन काल (1948–1955) में विदेश नीति से सम्बन्धित लिये गये निर्णय भारत की नीतियो ं से मतभेद पूर्ण रहे लेकिन यह सम्बन्ध वैमनस्यपूर्ण नहीं कहे जा सकते कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर वाद–विवाद/मतभेदों के बावजूद भी कई मुद्दों पर दोनों देशों के दृष्टिकोण समान रहे एस0डब्लू0आर0डी0 भण्डार नायके के शासन काल (1956–1959) में तथा श्रीमती श्रीमावोभण्डार नायके के शासन काल (1960–1965) में भारत और श्रीलंका के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रहे। जयवर्द्धने की सरकार (1977–1987) तथा प्रेमदासा की सरकार (1988–1993) के शासन काल में दोनों देशो ं के मध्य मुख्य मुद्दा तमिल प्रवासियों की समस्या रहा 29 मई 1987 को भारत और श्रीलंका के मध्य इस समस्या पर समाधान हेतु ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर हुए।

भारतीय विदेश नीति के लक्ष्य –

किसी भी देश की विदेश नीति के कुछ मुख्य लक्ष्य होते है। इन विदेश नीति के सश्यों मे ं मुख्य रूप से राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करना रक्षा करना होता है। के. जे. होत्सती ने राष्ट्रीय हितों का अर्थ बताते हुए कहा कि भविष्य में बाधित स्थिति, जिसे राज्य सरकारें अपने नीति निर्माताओं दवारा निर्धारित नीतियों के आधार पर बनाये रख कर प्राप्त करना चाहती है। यह आवश्यक नहीं है कि किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति के लक्ष्य हमेशा बाली बने रहे इसमें राष्ट्रीय हितों के आधार पर अश्यों में परिवर्तन होता रहता है। लेकिन लक्ष्यों मे ं परिवर्तन सामान्य रूप से विशेष परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के आधार बदलता रखता है। विदेश नीति के लक्ष्यों को अल्पकालीन, मध्यकालीन व दीर्घकालीन क्षेणीयों में बाँटा गया है। विदेश नीति गतिशील होती है इसलिए लक्ष्य भी गतिशील होते है। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति बदलती रहती है उसी प्रकार विदेश नीति के लक्ष्य भी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, April 2025
Impact Factor: 7.67

बदलते रहते है। विदेश नीति पर बाह्य एवं आन्तरिक वातावरण का प्रभाव रहता है। फिर भी इतिहास, व्यक्तित्व, विचारधाराएँ आदि का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित लोता है। भारत भी जनका अपवाद नहीं है। भारतीय विदेश नीति के लक्ष्यों में बरमुखी तत्वों का योगदान रहा है। भारत की विदेश नीति के लक्ष्यों में ऐतिहासिक तत्वों का प्रभाव रहा है। इसी सन्दर्भ मे ं पंडित जवाहर लाल नेहरू ने टिपण्णी की है कि यह नहीं समझना चाहिए कि भारत ने एकदम नए राष्ट्र के रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया है। इसकी नीतियाँ हमारे भूत व बर्तमान इतिलास, राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास तथा इसके द्वारा अभिव्यक्त विभिन्न आदशी पर आधारित है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर भारतीय संस्कृति में दो परम्पराएं प्रमुख रही है। प्रथम प्रकार मे ं मिता, सहयोग, शान्ति, विश्व बन्धुत्व व ऑहिमा रहा है। जिसका विकास अशोक, महात्माबुद्ध, महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित रहा है जो साध्य के साथ—साथ माधानों की पवित्रता पर बल देता है। दूसरी प्रकार में मैकीयावली व कौटिल्य के विचारों पर आधारित रही है। जो शक्ति व यथार्थता पर बल देती है। जिसमें साध्य की प्राप्ति के लिए सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। किन भारत की विदेश नीति प्रमुख रूप से प्रथम परम्परा पर ही आधारित रती है। इसी आधार पर विदेश नीति के लक्ष्य निर्धारित होते है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. भारतीय विदेश नीति पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के प्रभावों का अध्ययन करना
2. भारतीय विदेश नीति के सामान्य लक्ष्यो ं, उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों का अध्ययन करना

अनुसंधान क्रियाविधि प्रस्तावित शोध कार्य मे ं प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों के तहत संबंधित मूल दस्तावेजों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं का अवलोकन किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों के तहत वर्तमान समय मे ं प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं एवं विदेश संधि समझौतों, वार्ताओं के माध्यम से मिली जानकारीयों का अवलोकन किया गया है। विषय—वस्तु से संबंधित शोध प्रबंधों का उपयोग किया गया है। इनकी तुलना प्राथमिक स्त्रोतों से कर वास्तविकता तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। प्राथमिक एंव द्वितीय स्त्रोतो से तथ्यों के संकलन के उपरांत आवश्यक तथ्यों का चयन कर उनका क्रमबद्व विन्यास प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में बिश्लेषणात्मक .तुलनात्मक एंव वैज्ञानिक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है वैज्ञानिक द्वष्टिकोण से अवलोकन कर तथ्यों की निष्पक्ष व्याख्या प्रस्तुत की गयी है शोध कार्य में पूर्ण निष्पक्षता . तटस्य एवं तथ्यपरक विवेचना प्रस्तुत की गयी है।

शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भारतीय विदेश नीति पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है। इसके लिए मूलतः विश्लेषणात्मक व तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें इस काल के दौरान प्रकाशित प्राथमिक व दवितीयक सभी प्रकार के स्त्रोता का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों में भारतीय विदेश नीति मंत्रालय द्वारा प्रकाशित प्रपत्रों का विश्लेषण किया गया है। विदेश नीति का विश्लेषण करना तथा भारतीय विदेश नीति की प्रमुख अवधारणाओं एवं प्रवर्तियो ं को रेखांकित करना है। शोध प्रबन्ध में पर्यवेक्षात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है जिसमें उस दौरान भारतीय विदेश नीति में संबन्धित महत्तवपूर्ण घटनाओं, अवधारणाओं क्रियान्यवन एवं निर्माण, कारणों और परिणामों को गहनता से पर्यवेक्षित करते लए अंतर्निहित प्रवृतियों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

शोध निष्कर्ष –

भारत की विदेश नीति का पहला और व्यापक उद्देश्य–किसी अन्य देश की तरह–अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है। ष्राष्ट्रीय हितोंष का दायरा काफी व्यापक है। उदाहरण के लिए हमारे विषय मे ं इसमें शामिल हैरू क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करना, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा। संक्षेप में, पहला उद्देश्य भारत को पारंपरिक और गैर–पारंपरिक खतरों से बचाना है। दूसरा उद्देश्य एक बाहरी परिवेश बनाना है जो समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल हो। मैं विस्तृत रूप सेरू हमें विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के रूप में पर्याप्त बाहरी आदानों की आवश्यकता है ताकि हम भारत में एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित कर सकें, ताकि मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों को विकसित किया जा सके। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, सफल हो सकते हैं, ताकि हमारे पास उन्नत कृषि और आधुनिक रक्षा उपकरण आदि हों। हाल के वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके विकास की कूटनीति हुई है। पिछले 72 वर्षों में भारत एक गरीब विकासशील देश से उभरती हुई अर्थव्यवस्था में विकसित हुआ है और अब इसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक अगुवा के रूप में गिना जाता है। इसलिए तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की आवाज वैश्विक मंचों पर सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, भेदभाव रहित वैश्विक व्यापार वैश्विक शासन की संस्थाओं के सुधार, जो दुनिया के बाकी के रूप में ज्यादा के रूप में भारत को प्रभावित करते हैं। जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व जनमत को प्रभावित करने में सक्षम हो। भारत के 30 मिलियन सशक्त प्रवासी हैं जिनमें अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरेविश्व मे ं फैले हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों मे ं यह मेजबान देशों में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। यह भारत और अन्य देशों के बीच मजबूत कड़ी प्रदान करता है और द्विपक्षीय संबंधो ं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। चौथा और एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतवंशियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही यथासंभव उनके हितों की रक्षा करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. मथुरालाल शर्मा, प्रमुख देशों की विदेश नीतिया, कॉलेज बुक डिपों, जयपुर (राजस्थान), 2004
2. आर. एस. यादव, भारत की विदेश नीति, किताब महल, पटना, ए 2002, पृ. 20
3. महेन्द्र कुमार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष, साहित्य भवन, आगरा, 2005
4. खन्ना बी. एन. भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2000, पृ–1
5. नेहरू, भारतीय विदेश नीति पृ.–589
6. डॉ. रामदेव, भारद्वाज, भारत और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, म.प्र. हिन्दी प्रकाशन अकादमी, भोपाल,2003
7. फडिया, बी. एल.–यूनीफाइड राजनीति विज्ञान, साहित्यभवत आगरा, सन् 2005, पृष्ठ–43
8. डॉ. सुरेश चन्द्र सिंहल, अंतराष्ट्रीय राजनीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, 203 105, पृष्ठ 25
9. एन. बी. राजकुमार, दी बैंक ग्राउंड ऑफ इंडियन फॉरन पॉलिसी, नई दिल्ली 1952
10. कोली. सी. एम., प्रमुख देशों की विदेश नीतिया, साहित्यागार जयपुर,पेज–10, 2001

*****